International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 3 Issue 6, November-December, 2015

सूनी घाटी का सूरज: वर्तमान वास्तविकताओं का कच्चा चिट्ठा (अपनी जड़ों से कट जाना)

डॉ. वीरेंद्र कुमार

एसोसिएट प्रोफेसर, राजधानी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, भारत

उपन्यास : सूनी घाटी का सूरज

उपन्यासकार : श्रीलाल शुक्ल

शोध का सार तत्त्व

'सूनी घाटी का सूरज 'श्रीलाल शुक्ल का उपन्यास 1957 में प्रकाशित हुआ। उपन्यासकार का यह पहला उपन्यास है। ग्रामीण वातावरण केअभाव भरे सूने जंगल के बीच से शिक्षा की भूख लिए अपने मन में कुछ आकांक्षाओं को लेकर आई. पी. एस., आई. ए. एस. , प्रोफेसर आदिजो युवक महानगर और महाविद्यालयों में आते हैं वे सफलता के पद पाकर किसी बड़े बाप की बेटी के पति बन जाते हैं अथवा किसी पूंजीपति अथवा राजनेताओं के चहेते उन्हीं के अनुकूल और अनुगामी बन जाते हैं। किंतु रामदास युग के इन तमाम आकर्षणों से दूर होकर अंधेरे के पथरीले रास्तों का ही पथिक बना रहता है। उसका लक्ष्य है गांव में आकर दलित -पतित और अशिक्षित को शिक्षित एवं विवेकशील बनाना और उनकी निराशाओं को दूर करके नई चेतना और रोशनी से समृद्ध करना। इस प्रकार धन प्राप्ति अथवा ऐश्वर्य आराम सुख एवं सुविधाओं और यश को पाने की अभिलाषा की बजाय गरीबों की सेवा और अशिक्षित गरीबों को शिक्षित कर उठाने की कल्याण भावना की प्रेरणा देना उपन्यास का तत्त्व है। वर्तमान की वास्तविकता यह है कि गांव के अंदर अंधेरे पथरीले गलियारों से निकलकर नगर और महानगरों में आकर युवक सुविधा सुख और ऐश्वर्य के हास - विलास में डूब जाते हैं और उन पथरीले अंधेरे गलियारों को भूल जाते हैं जहां से वे कभी निकले थे और जहां से निकलकर वे अब वर्तमान में पहुंचे हैं।

'सूनी घाटी का सूरज 'उपन्यास में नायक है रामदास जो गांव के स्कूल में पढ़ता है जिसमें पढ़ने वालों की संख्या केवल बीस होती है। उपन्यासकार लिखता है- "मेरे उन साथियों में कोई दस तक पहाड़ा पढ़ता हुआ हल जोत रहा है । कोई सौ तक गिनती गिनता हुआ भाड़ झोंक रहा है। कोई रामायण की चौपाइयां कहता हुआ बैल गाड़ी चला रहा है। ढिकुली खींच रहा है।" 1

रामदास अपने साथ पढ़ने वाले बच्चों की यह तस्वीर उकेरता है और वह यह भी स्पष्ट करता है वे सब वही कर रहे हैं जो उनके पुरखे करते चले आए हैं। सबके घर कच्चे हैं। जहां बरसात में दीवार गिर जाती है उसी जगह वैसी ही दूसरी दीवाल में फिर उठा लेते हैं ।"2

रामदास के पिता के पास जायदाद के नाम पर डेढ़ बीघा का खेत था । रामदास की माता का देहांत रामदास के बचपन में ही हो गया था। स्वयं रामदास के अनुसार "तीन बहनों की शादियों में मेरे पिता पर अपने ही एक खानदानी का बहुत सा ऋण हो गया था। हम लोग उनके जानवरों के बाड़े से मिले हुए एक छोटे से घर में रहते थे क्योंकि हमारा अपना घर और खेत उन्हीं के यहां रेहन रखा जा चुका था। " 3

रामदास जाति के ठाकुर थे। कहने के लिए गृह स्वामी रामदास के काका थे परंतु वास्तव में पिताजी का काम हलवाहे का था चार बजे सवेरे से उठकर पिताजी जानवरों का चारा काटते थे। वे ऋणी थे और उस ऋण को उतारने के लिए आजीवन दासता करनी पड़ी। रामदास के पिता उसे भैंस चराने के लिए भेजते थे पर रामदास कहता - "काका मुझे स्कूल जाने दो मैं पढ़- लिखकर पैसा कमा लूंगा और तुम्हारा कर्ज पाट दूंगा।" 4

ग्यारह वर्ष की आयु में गांव से दो मील दूर एक प्राइमरी स्कूल में रामदास भर्ती हुआ। वहीं मिडिल स्कूल भी था। नन्हू सिंह भी रामदास के साथ स्कूल में जाता था। दोपहर में रामदास केवल भुने हूए चनों से पेट भरता जबकि नन्हू के पास पूड़ियां और आलू की तरकारी होती । नन्हू सिंह रामदास से कहता था "दस्सू करजे का लेना और जहर का खाना बराबर है।"5

रामदास को नन्हू सिंह की बारात में समाचार मिला कि उनके पिता के हाथ कोल्हू में फँस कर पिस गए - "मैं अस्पताल पहुंचा।.... दोनों हाथों में कंधों तक पट्टी बंधी थी। पट्टी के नीचे क्या था यह देख नहीं पाया.... तुम्हारा माथा सहलाने को जी करता है पर हाथ अपंग हो गए हैं । सब खून निकल चुका है....रोओ न बेटा ,चलाचली का मौका है। जी बड़ा करके सब कुछ झेलना चाहिए।"6

और फिर रामदास के पिता ठीक नहीं हो पाए -"अपना-अपना प्रारब्ध है बेटा, घबराना नहीं..... पढ़ाई नहीं छोड़ना.....।" 7

छठी में पढ़ने वाले लड़के सोल वर्ष का रामदास पिता की मृत्यु के बाद स्कूल के प्रधानाध्यापक नौरत्न लाल की शरण में रहता है। अमजद अली जो उसके साथ पढ़ता है, वह रामदास की सहायता करता है । प्रधानाध्यापक नौरत्न लाल ने रामदास से कहा -- "मैंने तुम्हारे ठाकुर से बात कर ली है। वह तुम्हें मेरे घर रखने को तैयार है । कर्ज के निपटारे के लिए वह तुम्हारा खेत ले लेगा। .....घर पर शाम सवेरे कुएं से पानी खींच दिया करना । अमीन साहब जो छोटा मोटा काम बतावे वह देख लेना।" 8

प्रधानाध्यापक के घर रहते हुए अमीन साहब रामदास से बहुत काम करवाते थे जिससे पढ़ाई नहीं हो पाती थी इसी कारण रामदास ढंग से नहीं पढ़ पाया था - "छमाही की परीक्षा में मैं गणित में फेल हो गया। सवेरे से उठकर पूरे घर का पानी भरने और अमीन साहब की सेवा सुश्रूषा करने में मुझे 2:00 बजे जाया करते थे।" 9

अमीन साहब के अलावा उन्हीं के परिवार की नौरत्न की पत्नी जड़ावनवाली रामदास को अक्सर तंग करती थी। रामदास के अनुसार- "मकान के पिछवाड़े की ओर गुसलखाने से लगी हुई एक सीलनदार कोठरी थी । उसी में अपनी टूटी चारपाई पर में एक फटी रजाई ओढ़े लिख रहा-पढ़ रहा था। जड़ावनवाली की आवाज पाँच मिनट बाद फिर कान में पड़ी 'हम खाना खाकर हाथ धोने को खड़े हैं। घर में एक बूंद भी पानी नहीं है। जब देखो तब यही सांसत बनी रहती है। बखत पर पानी कभी नहीं मिलता।" 10

इस प्रकार के कष्टों के बीच रामदास छठी में फेल हो गए लेकिन मुंशी जी ने तरक्की दिलवाकर सातवीं कक्षा में आगे कर दिया। मुंशी जी आगे की अंग्रेजी पढ़ाई के लिए कानपुर भेजना चाहते थे तो मुंशी जी की पत्नी को (जड़ावनवाली को) बुरा लगा " रामदास तो अब कानपुर में जब अंग्रेजी पढ़ेंगे ... जब कुकुरिया जगन्नाथन जाएंगी तो पत्तले कौन चाटेगा।"11

अपनी पढ़ाई के लिए कुछ उपाय जुटाने के लिए रामदास प्रयास करता हुआ अनेक जगहों पर पहुंचता है। अमजर अली के सहयोग से अमजद अली के मामा के गांव में काम करता है। वह देखता है - " जिस अभिशप्त देश में खड़ा हूं, वहां सब कुछ देखने के लिए ही है । यहां एक ओर आठ आने के पीछे कोई स्त्री सांप और बिच्छुओं को रौंदती हुई, दो रोगी बच्चों के भविष्य की आशंका से कांपते हुए प्राणों के साथ, मन- मन भर के पत्थर सिर पर लादकर, पहाड़ियों की ऊंची -नीची पगडंडियों पर टकराती चलती है। यहां दरिद्रता और अशिक्षा के क्रूर आतंक में मानव शरीर का अब भी दासों जैसा व्यवहार होता है।"12

अमजद अली के मामा ने रामदास को अपने खर्च पर इंट्रेस पास कराने का वचन दिया और लगभग बीस कोस दूर एक हाई स्कूल में पढ़ने के लिए रामदास चला गया। मुंशी नौरत्न लाल ने रामदास को दो चिट्ठी लिख कर ताकि रामदास आगे पढ़ सके - " आगे पढ़ने के लिए कानपुर जाओ और क्षत्री स्कूल में भर्ती हो जाओ...आगे के इंतजाम के लिए इन दोनों चिट्ठियों से मदद मिलेगी।"13

रामदास पहली चिट्ठी वाले बाबू राम रतन से मिलने गया। राम रतन महाराज के पास रामदास को ले गए और बोले--- "महाराज यह आपका सेवक है। मुंशी नौरतन ने लिखा है कि यह क्षत्रिय कुलोत्पन्न बालक है । पढ़ना चाहता है। यहां क्षत्रिय स्कूल में भर्ती हो रहा है। कोठी पर इसके पड़े रहने की और कुछ वजीफा बांध देने की प्रार्थना की है।... महाराज जी ने भर्राई आवाज से कहा - "इसके रहने का ठिकाना कर दो। बस यही बहुत है। वजीफा देने के दिन गए।"14

रामदास कक्षा में के रूप में विख्यात हो गया। लेकिन फिर रहने का संकट खड़ा हो गया। कोठी पर दूसरों का कब्जा हो गया। स्कूल के चौकीदार के पास रामदास आ गया - "स्कूल के चौकीदार ने कहा, आज यहीं पड़े रहे। सवेरे अपना समान मेरी कोठरी में डाल देना। एक डोकरी है। वह मेरी रिश्ते में सास लगती है। उसकी शायद एक कोठरी खाली है।"15

रामदास को इस जगह से बड़ी तकलीफ होती थी _ "सरे शाम ही गली में धुआं भर जाता। सूअरों, कुत्तों और धोबियों की छुटी हुई गायों के तेजी से निकलने में न जाने कितनी मुठभेड़ें होती।"16

रामदास को वजीफा के रूप में थोड़ी राशि मिलती थी _ " मुझे पाँच रुपए सरकारी छात्रवृत्ति मिल रही थी।दो रुपए क्षत्रिय महासभा की ओर से प्रतिमाह मिलते। इन सात रुपयों के भीतर मुझे महीना भर आना होता।"17

बिजली रामदास के पास थी नहीं वह सड़क की बिजली के लिए दूर जाता था - " जहां मैं रहता था, वहां से बिजली की बत्तियों वाली सड़क लगभग आधा मील पड़ती थी। इस आधे मील को कई गलियों से होकर पार करना पड़ता था।"18

रामदास पढ़ने की तीव्र इच्छा रखता था परंतु परिस्थितियां प्रतिकूल थीं । हेड मास्टर अंबिकेश सिंह से रामदास ने उस गन्दी जगह से निकलने के लिए निवेदन किया तो -- " चपरासियों की रहने वाली कोठरियों में से एक कोठरी रहने के लिए दे दी गई, मुझे स्कूल प्रबंध समिति के मैनेजर के घर दो छोटे-छोटे बच्चों को शिक्षा देने का काम दिया।"19

यहीं स्कूल में रामदास की श्याममोहन से मित्रता बढ़ी । श्याममोहन संपन्न पिता का युवक है और सुषमा से प्यार करता है। घरवाले जब नहीं मानते तो घर से भाग जाता है ,तो पिताजी पोस्टर लगवाते हैं। वह राजी हो जाता है और उसका विवाह सुषमा से हो जाता है। वह रामदास से कहता है - " मैंने समाज से मुठभेड़ की। जात- पाँत के मिथ्या आडंबरों को नहीं माना। संपत्ति द्वारा खड़ी की गई वर्ग भेद की दीवारों को तोड़ दिया। सुषमा मेरे पड़ोसी बंगाली बाबू की लड़की है। वह मामूली क्लर्क हैं । जात के ब्राह्मण हैं। इस विवाह में मुझे मामूली संकट नहीं सहने पड़े हैं।"20

यहीं श्याममोहन अपने यहां रामू को पढ़ाने के लिए रामदास से कहते हैं।

दूसरे मित्र सुरेंद्र प्रताप बहादुर सिंह ,रामदास को यहीं स्कूल में मिले। किसी छोटी- मोटी रियासत की राजकुमारी से उनका विवाह हुआ था ।पिता की मृत्यु के बाद उन्होंने अपनी जमींदारी संभाल ली।

इंटर पास करके रामदास ठाकुर अंबिकेश सिंह के कारण लखनऊ में ठाकुर राजेश्वर सिंह की कोठी में एक कोने में एक कमरा पा जाते हैं।ठाकुर राजेश्वर सिंह की एक बेटी थी जिसका नाम था बेबी। ठाकुर राजेश्वर सिंह अपनी पुत्री बेबी को प्रतिभाशाली रामदास को ब्याहना चाहते हैं किंतु रामदास इसे स्वीकार नहीं करता। परिणाम स्वरूप राजेश्वर सिंह की सुविधा से वंचित होना पड़ा।

रामानुज चटर्जी रामदास के अन्य मित्रों में से एक था जो आई. पी. एस बनना चाहता था। राजधर राजनीति के क्षेत्र का मित्र था जो रामदास को अपनी पार्टी में लेना चाहता था। राजधर किसी देशी रियासत से संबंध था।

रामदास अर्थशास्त्र की योग्यता रखता है। पुस्तक लिखता है और अन्य पाठ्य सामग्री तैयार करता है किंतु उसका नाम नहीं होता उसे केवल किंचित पैसा मिलता है।

उपन्यास में भट्टाचार्य इसी सत्य का उद्घाटन करते हुए प्रोफेसर सिन्हा से कहता है -- " यह भी छुपाया जा सकता है कि इस साल रामदास सिंह को लेक्चरार किस कारण नहीं बनाया गया? क्या यह अच्छी बात है कि इस थर्ड डिविजनर छोकरे को सिर्फ इसी लिए वह जगह दे दी गई कि वह किसी खास आदमी का दामाद है? इस गरीब लड़के को इसीलिए दो साल से धोखा देते चले आ रहे हैं कि लेक्चरार बना देने के बाद उसके दिमाग का व्यापार ना हो पाएगा।"21

और दुनिया की दौड़ में उसके मित्र यहां वहां जम गए। उपन्यासकार के शब्दों में 'श्री राजधर बीए एलएलबी उपमंत्री शिक्षा विभाग होते हैं... ।"22

श्याममोहन व्यापारी बनने के साथ ही सरस्वती साधक बन गया है - " वह लक्ष्मी और सरस्वती के सनातन बैर को मिटाकर उनकी बड़ी ही प्रीतिमान संधि कर चुका है।"23

राजनीति के क्षेत्र में कुंवर सुरेंद्र प्रताप जम बैठते हैं - " एक लंबे- चौड़े फार्म पर उनकी एक कोठी खड़ी हुई है। सवेरे 5:00 बजे से उसके सामने के चबूतरे पर मजदूरों की एक सेना खड़ी हो जाती है।"24

रामानुज रामदास का मित्र आई पी एस हो जाता है। इन सबके अपने- अपने सपने थे जो इन्होंने देखे लेकिन रामदास का अपना सपना इन सब के सपनों से अलग वहीं था - " गांव में जाना, दलितों की शक्ति बनना, अशिक्षितों को विद्या देना और उनकी मूर्छा को समाप्त करके उन्हें नई चेतना देना।"25

यही है उपन्यासकार की मूल संवेदना जो हमें अपनी जड़ों की ओर धकेलती है; जहां से हम शुरू हुए थे उसे ना भूल पाने के लिए उसने रामदास जैसे चरित्र को गढ़ा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

सूनी घाटी का सूरज- श्रीलाल शुक्ल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली- 2, 1987

1. सूनी घाटी का सूरज- श्रीलालशुक्ल-पृ.सं.23
1. ---------- वही---------- पृष्ठ संख्या 23
2. ----------वही---------- पृष्ठ संख्या 24
3. ---------- वही---------- पृष्ठ संख्या 26
4. ---------- वही---------- पृष्ठ संख्या 31
5. ---------- वही---------- पृष्ठ संख्या 33
6. ---------- वही---------- पृष्ठ संख्या 33
7. ---------- वही---------- पृष्ठ संख्या 37
8. ---------- वही---------- पृष्ठ संख्या 39
9. ---------- वही---------- पृष्ठ संख्या 41
10. ---------- वही---------- पृष्ठ संख्या 49
11. ---------- वही---------- पृष्ठ संख्या 57
12. ---------- वही---------- पृष्ठ संख्या 59
13. ---------- वही----------पृष्ठ संख्या 62
14. ---------- वही---------- पृष्ठ संख्या 67
15. ---------- वही---------- पृष्ठ संख्या 69
16. ---------- वही---------- पृष्ठ संख्या 70
17. ---------- वही---------- पृष्ठ संख्या 71
18. ---------- वही---------- पृष्ठ संख्या 79

19. ---------- वही---------- पृष्ठ संख्या 84
20. ---------- वही----------पृष्ठ संख्या 122
21. ---------- वही---------- पृष्ठ संख्या 127
22. ---------- वही---------- पृष्ठ संख्या 128
23. ---------- वही---------- पृष्ठ संख्या 128
24. ---------- वही---------- पृष्ठ संख्या 132